अथवा

'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक की प्रासंगिकता को स्पष्ट कीजिए।

5. 'स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन' रचना का उद्देश्य स्पष्ट करें। (15)

अथवा

यात्रा संस्मरण की विशेषताओं के आधार पर 'सरयू पार की यात्रा' का विवेचन कीजिए।

6. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए :- (7×2=14)

(क) भारतेंदु हरिश्चन्द्र और हिंदी नवजागरण

(ख) गोवर्धनदास का चरित्र-चित्रण

(ग) संपादक के रूप में भारतेन्दु हरिश्चंद्र - बालबोधिनी

(घ) 'दिल्ली दरबार दर्पण' निबन्ध की अंतर्वस्तु

RAMANUJAN COLLEGE LIBRARY
Kalkaji, New Delhi-110019

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 9418 **K**

Unique Paper Code : 2053100017

Name of the Paper : भारतेंदु हरिश्चन्द्र

Name of the Course : **BA (Hons.) Hindi – DSE**

Semester : VII

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (8×2=16)

(क) सांच कहैं ते पनही खावैं। झूठे बहुविधि पदवी पावै।।
छलियन के एका के आगे। लाख कहाँ एकहु नहिं लागे।।
भीतर होइ मलिन की कारो। चहिये बाहर रंग चटकारों।।
धर्म अधर्म एक दरसाई। राजा करै सो न्याव सदाई।।
भीतर स्वाहा बाहर सादे। राज करहिं अमले अरु प्यादे।।
अंधाधुंध मच्यौ सब देसा। मानहुँ राजा रहत बिदेसा।।

अथवा

तुव कस सीतल पौन परसि चटकीं गुलाब की कलियां।

अति सुख पाइ असीस देत सोइ करि अंगुरिन चट अलियां।।

भए धरम में थित सब द्विज जन प्रजा काज निज लागे।

रिपु जुवती मुख कुमुद मन्द जन चक्रवाक अनुरागे।।

अरध सरिस उपहार लिए नृप ठाढ़े तिन कहं तोखौ।

न्याव कृपा सों ऊंच नीच सम समुझि परसि कर पोखौ।।

(ख) भाई हिंदुओं, तुम भी मतमतांतरों का आग्रह छोड़ो। आपस में प्रेम बढ़ाओ। इस महामंत्र का जप करो। जो हिंदुस्तान में रहे चाहे किसी जाति, किसी रंग का क्यों न हो वह हिंदू है। हिंदू की सहायता करो। बंगाली, मरट्ठा, पंजाबी, मदरासी, वैदिक, जैन, ब्राहमणों, मुसलमानों सब एक का हाथ एक पकड़ो। कारीगरी जिससे तुम्हारे यहाँ बढ़े तुम्हारा रुपया तुम्हारे ही देश में रहे वह करो। देखा जैसे हजार धारा होकर गंगा समुद्र में मिली है वैसे ही तुम्हारी लक्ष्मी हजार तरह से इंग्लैंड, फरांसीस, जर्मनी, अमेरिका को जाती है।

अथवा

आजकल ऐसी राजनीति के कारण जिससे सब जात और सब धर्म के लोगों की समान रक्षा होती है, श्रीमती की हर एक प्रजा अपना समय निर्विघ्न सुख से काट सकती है। सरकार के समभाव के कारण हर आदमी बिना किसी रोक-टोक के अपने धर्म के नियमों और रीतियों को बरत सकता है।

राजराजेश्वरी का अधिकार लेने से श्रीमती का अभिप्राय किसी को मिटाने या दबाने का नहीं है, वरन् रक्षा करने और अच्छी राह बतलाने का।

2. भारतेंदु हरिश्चंद्र के साहित्य में अभिव्यक्त सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्रीयता की भावना पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

भारतेंदु युगीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

3. 'दशरथ-विलाप' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

अथवा

भारतेंदु की मुकरियों में अभिव्यक्त सामाजिक-राजनितिक व्यंग्य पर विचार कीजिए।

4. रंगमंचीय दृष्टि से भारतेंदु कृत 'अंधेर नगरी' नाटक की समीक्षा कीजिए। (15)